ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 162-163
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-8, No.-II, Issues-IX YEAR- Dec-2017

डेयरी पशुओं का समुचित प्रबन्ध एवं देखभाल

डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर– पशुपालन एंव दुग्ध विज्ञान विभाग, श्री मुरली मनोहर टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया, (उ0प्र0) भारत

कृषि एंव पशुपालन भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। भारत वर्ष में रहने वाले अधिकतर लोग खासकर ग्रामीण क्षेत्रों के लोगो ं का जीवन कृषि पर निर्भर है। हमारी कृषि भी पशुपालन पर निर्भर है। डेयरी व्यवसाय से आज बहुत से लोग अपना जीवन चलाते है तथा अच्छा मुनाफा कमा रहे है। डेयरी पशु से प्राप्त आय तथा लाभ कई अन्य व्यवसायों से बेहतर होता है।

यदि इनके समुचित रख–रखाव एंव पोषण पर हम वैज्ञानिक तरीके से ध्यान दे तो इससे पूरा –पूरा लाभ उठाया जा सकता है। अच्छी गुणवत्ता युक्त ज्यादा मात्रा में दुग्ध उत्पादन से ही अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि दुधारू पशु सही समय पर नियमित गर्भित हो तथा प्रति वर्ष बच्चा प्राप्त होगा। कम लागत मे ं कम अंतराल रख कर पशुओ ं की दुग्ध उत्पादन क्षमता बराबर बनी रहे । एक डेयरी व्यवसाय मे ं सदैव ज्यादा दूध देने की क्षमता वाले पशु रख जाना चाहिए तथा उनका उचितत रख रखाव व प्रबन्ध संतुलित पोषण तथा उनके रोगो पर प्रभावी नियंत्रण अति आवश्यक है।

1 उच्च उत्पादन क्षमता वाले पशु– डयेरी व्यवसाय सदैव ज्यादा दूध देने वाली गाय या भैसो ं से ही शुरू करना चाहिए। दुधारू पशुओ ं का मूल्यांकन उसके दुग्ध उत्पादन क्षमता,प्रति वर्ष एक बच्चा देने की क्षमता तथा उसके उत्तम स्वास्थ के आधार पर किया जाना चाहिए। इसके लिए उसकी शारीरिक बनावट,अच्छी वंशावली व आयु को ध्यान में रखा जाता है। ताकि भविष्य में किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े । हमेशा श्रेष्ठ पशुओ ं का चयन करना चाहिए। गाय या भैंस का तीसरे या चौथे ब्यात तक ही दूध उत्पायदन उच्च स्तर पर रहता है। फिर धीरे–धीरे कम होने लगता है। अतः इस व्यवसाय में अच्छी नस्ल के कम आयु वाले पशु ही लेने चाहिए। जिससे उनका उत्पादन लम्बे समय तक बना रहे। हमें अधिक दुग्ध उत्पादन वाली नस्ले जैस– जर्सी फ्रिजियन नस्ल की संकर गायें देशी नस्लों में साहीवाल, थारपारकर गिर, राठी, सिंहधी आदि तथा भैसों में मुर्रा व उन्नत मुर्रा नस्ल की भैस पालना चाहिए। उनकी प्रजनन संबन्धी समस्याओ ं का निराकरण एवं उनक` प्रबन्धन पर समुचित ध्यान देना चाहिए।

संतुलित पोषण– पशुओ के अच्दे उत्पादन व अच्छे स्वास्थ के लिए उनक` संतुलित आहार देना अति आवश्यक होता है। दुग्ध उत्पादन की कुल लागत का लगभग 60: से ज्यादा खर्चा उसको खिलाये जाने वले चारे–दाने पर होता है। इस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है अन्यथा पशु पालक के लिए ये घाटे का सौदा साबित हो सकता है। पशु को सूखे चारे के अलावा पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक हरा चारा,दाना तथा पानी रोजाना दिया जाना चाहिए। दलहनी हरे चारे जैसे लोबिया,लूसर्न,बरसीम,अमतौर सूखे चारे भूसा, पुआल, आदि के साथ मिला कर देने से अफारे का भय नही रहता। चारे की कुट्टी काटकर तथा दाना मिश्रण पीस कर भिगोकर देने से उसकी उपयागिता बढ़ जाती है। सदैव स्वच्छ पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होना चाहिए। दुधारू पशुओ ं को अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए अधिक मात्रा मे पानी पिलाना चाहिए। सामान्यतः दुधारू पशु 21 वें दिन पुनः हीट में आते है यह 12–24 घंटे तक रहती है । इस लिए पशु इसके 8–12 घंटे में गर्भधान कराना उचित रहता है। यदि वह सुबह के समय गर्मी में आता है। तो उसे शाम को तथा यदि शाम में गर्मी मे आता है। तो उसे सुबह गर्भधान कराना उपयुक्त रहता हैं समय पर उन्हे अच्छी चुनी हुए नस्ल के सांड से ब्रीडिंग कराना चाहिए।

स्वास्थ एंव रोग नियंत्रण– डये री का व्यवसाय मे ं पशुओ ं का स्वास्थ प्रबन्धन एक महत्वपर्ण कारक है। आए दिन पशु तरह–तरह भी बीमारियों का शिकार होते रहते है। जिससे उनके प्रजनन एवं उत्पादन क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। सामान्य रखरखाव व खान–पान पर उचित ध्यान न देना एक बड़ा कारण बन सकता है। पशुओं का विभिन्न बीमारियों से बचाव उपचार से ज्यादा बहे तर उपाय होता है। इसलिए हमें अपने पशुओं के नियमित टीका लगवाना चाहिए पशु, पशुशाला, बर्तन, स्थान की समुचित साफ सफाइ करके किसी जीवणु रोधी का छिड़काव कर देना चाहिए। यदि किसी पशु को रोग का प्रकोप हो जाता है। तो रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए तथा इसकी सूचना तत्काल अपने नजदीकी पशु चिकित्सक को देना चाहिए पशु शाला मे ं पानी के निकास की उचित व्यवस्था हो तथा पीने का शुद्ध पानी पशुओ ंको पर्याप्त मात्रा मे देना चाहिए और पर्याप्त साफ–सफाई रखना चाहिए। पशु स्वास्थ पशुपालक

अनुरूपी लेखक

को प्रतिदिन चारे–दाने,स्वच्छता,प्रयोग किए जाने वाले यंत्र–बर्तन, पशुशाला, दुग्ध, दुहना, रख रखाव आदि व्यवस्था सबंन्धी क्रिया कलापों का बारीकी से निरीक्षण करना चाहिए।

ताकि किसी असावधानी से बचा जा सके तथा स्वास्थ संबन्धी जानकारी समय रहते प्राप्त कर सकें इसलिए हमें प्रतिदिन की देखभाल में विशेष सावधानी रखनी चाहिए। पशुओं को स्वस्थ रखने तथा पाचन क्रिया को ठीक प्रकार से बनाये रखने के लिए निश्चित रूप से व्यायाप कराना चाहिए। उन्हें स्वतंत्रता पर्वू क घूमने देना चाहिए। ठीक प्रकार से पशु के रख–रखाव तथा देखभाल करने व उन्हे पौष्टिक चारा दाना खिलाने से उसकी रोग रोधक क्षमता का विकास होता है। तथा पशु स्वस्थ रहता है।

पशु को सक्रमक रोगो जैसे एन्थ्रेक्स, गलाघोट्, लंगड़ी व खुरपका मुँह पका आदि रोगों से बचाने के लिए समय से टीकाकरण जरूर करवाना चाहिए। साथ ही पशुशाला एवं पशुओं की साफ–सफाई पर विशेष ध्यान देने व उन्हें संतुलित आहार खिलाने से बीमारियों से उनका बचाव रहेगा तथा दुग्ध उत्पादन भी अच्छा रहेगा।

आवास व्यवस्था एंव प्रबन्ध– डये री पशुओ ं मे ं बहे तर उत्पादन हेतु आवास प्रबन्धन का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके उत्तम स्वास्थ्य,विकास एंव अधिकतम उत्पादन के लिए जितना पभु प्रजनन तथा पशु पेषण आवश्यक है। उतना ही उनकी आवास व्यवस्था भी जरूरी है होना चाहिए ताकि प्रतिकूल वातावरण जैसे तेज धूप वर्षा, गर्म, तथा डण्डी हवा से बच सकें। साथ ही उनको जंगली जानवरों व चारों से बचाया जा सकें। कम समय व खर्च मं सारे कार्यो को कुशलता पूर्वक कर सकते है। उनकी उचित देखभाल हो जाती है। जिससे अनेक प्रकार के रोगों से बचाव होता है तथा मृत्युदर को भी कमी आती है। पशुओं के दुग्ध उत्पादन एंव प्रजनन क्षमता में वृद्धि होती है अधिक लाभ प्राप्त कर सकते है।

छंटनी (Culling)- जिस प्रकार से खेत मे से अवांछनीय पौधे या खरपतवार से निकालते है उसी प्रकार डये रीफार्म पर दुधारू पशुओं की आय निरंतरता तथा उत्पादन स्तर को बनाए रखने के लिए अवांछनीय या अनुपायोगी पशुओ को छांटकर पशु झुण्ड से अलग कर दिया जाना चाहिए। नस्ल, उम्र, वातावरण, तथा अन्य कारणो से दिनोदिन उनकी उत्पादन क्षमता व प्रजनन क्षमता में ह्रास होने लगता है। कभी–कभी पशु के बॉझपन या अन्य कारणों अनुपयोगी हो जाते है। फार्म से प्राप्त आय पर बुरा असर पड़ने लगता है। कम उत्पादन, बीमारी, गर्भपात, अधिक बूढ़ापन के कारण डेयरी फार्म से निष्कासित कर दिया जाता है। जिस से अनावश्यक व्यय जैसे चारा–दाना तथा देखभाल आदि से बचाया जा सकें ताकि फार्म पर पशुओं के उत्पादन व प्राप्त होने वाली आय मे ं निरंतरता बनी रहे और उनकी क्रमशः उन्नति हो सके। इसलिए समय–समय पर उनको छांट कर निष्कासित करने की आवश्यकता हैं। इस प्रकार अपने डेयरी उच्च उत्पादन क्षमता वाले पशुओं को फार्म पर रखने के साथ–साथ उनके संतुलित पोषण में पौष्टिक हरा चारा, दाना व आरामदायक हवादार आवास व्यवस्था, उत्तम स्वास्थ सबंधी देखभाल तथा होने वाले रोगो पर प्रभावी नियत्रंण आदि पर विशेष ध्यान देगे तो निश्चित रूप से वे स्वस्थ रहेंगे अच्छा उत्पादन करेगें हम उनसे ज्यादा लाभ प्राप्त करने में सफल होगें।

*****